गांधी जी की दिवानी बाल योद्धा मलाला यूसुफजई

गोपाल नारसन
रूड़की

16 साल की मलाला यूसुफजई ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना पहला ऐतिहासिक भाषण देकर दुनिया भर को जता दिया है कि अब महिलाएं कमजोर नहीं रही और उनमें कट्टरपंथियों से लोहा लेने की ताकत आ गई है। मलाला ने अपने इस पहले भाषण में अहिंसा के महानायक बापू यानि महात्मा गांधी का भावपूर्ण स्मरण करके यह सिद्ध कर दिया है कि अहिंसा के बल पर बन्दूक का मुकाबला किया जा सकता है। मलाला ने अपने भाषण में साफतौर पर कहा कि तालिबान कलम और किताब से डरता है तभी तो उसने पाकिस्तान में उस जैसी छोटी–सी बच्ची पर जानलेवा हमला कर अपनी बूजदली का सबूत दिया है। मलाला ऐसी पहली 16 वर्षीय बालिका बन गई है जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण करने का अवसर मिला। साथ ही मलाला के बहादुरी पूर्ण दिवस के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने दुनिया भर से सात उन लड़कियों को भी पुरस्कृत किया है जिन्होंने मलाला की तरह बहादुरी और हौसले का रचा हुआ है। इन लड़कियों में दो भारतीय भी हैं। पाकिस्तान की इस बाल योद्धा मलाला यूसुफजई ने कट्टरपन्थी तालिबान को धूल चटा दी है। मात्र 11 साल की आयु से इन कट्टरपन्थी तालिबानियों से बिना किसी हथियार के लोहा लेने वाली इस बाल योद्धा की बहादुरी की दुनिया भर के देशों के साथ–साथ पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने भी मुक्तकंठ से प्रंशसा की थी। राष्ट्रपति स्वयं मलाला से मिलने गए थे और उसकी बहादुरी को सलाम किया था। यूं तो मलाला यूसुफजई पाकिस्तान के स्वात जिले के मिंगोरा शहर की एक साधारण सी लड़की थी और एक स्कूल में पढ़ने जाया करती थी। उसे स्कूल और किताबों के सिवाय कुछ मालूम न था। तभी सन 2007 में एक दिन जब वह रोजाना की तरह स्कूल गई तो उसे अपना स्कूल बन्द मिला। जब उसने स्कूल बन्द होने का कारण जानना चाहा तो उसे बताया गया कि तालिबान के फरमान से स्कूल हमेशा के लिए बन्द कर दिया है। मलाला को स्कूल का अचानक यूं बन्द होना बहुत बुरा लगा और वह घर लौटकर रात भर सो नहीं पाई। उसने अपने अब्बा से तालिबान की इस गलत हेकड़ी को लेकर लम्बी चर्चा की। वह चाहती थी कि तालिबान की इस हरकत का सब विरोध करें लेकिन जब दूसरा कोई तैयार नहीं हुआ तो मलाला ने स्वयं ही तालिबान के खिलाफ मोर्चा तानने का फैसला कर लिया और तालिबान की चुनौती के बावजूद न सिर्फ स्वयं बल्कि दूसरी लड़कियों को भी स्कूल ले जाने का साहस कर दिखाया।

उस समय मलाला के अब्बा ने उसे समझाया भी कि बेटी अभी तुम्हारी उम्र बहुत कम है, तुम कैसे इन कट्टरपन्थियों को सबक सिखा पाओगी। लेकिन मलाला अपनी जिद पर अड़ी रही और उसने तालिबान को सीधी उसी के घर में चुनौती देते हुए अपनी हमउम्र लड़कियों को तालीम दिलाने का फैसला कर लिया। मलाला को तालीम की अहमियत का पता ही तब चला जब तालिबानियों ने उसके स्कूल को जबरन बन्द करा दिया। जबरन स्कूल बन्दी से मलाला में कायम हुए प्रतिवाद के इस गजब के जज्बे ने उसे आगे बढ़ने का हौसला दिया और वह तालिबानियों के फरमान के खिलाफ तालीम की लौ जलाने में कामयाब होती चली गई। तालिबान को छोड़कर सभी ने मलाला के इस हौसले की दाद दी और उसके अब्बा जो कि स्वयं भी एक शिक्षाविद् व जाने–माने शायर थे ने अपनी बेटी के इस गजब के हौसले की सराहना की।

मलाला के समाज को बदलने और तालिबान की मनमानी रोकने की पहल से प्रभावित होकर बी.बी.सी. उर्दू ने मलाला की दास्तां डायरी रूप में प्रसारित करनी शुरू की। हालांकि इस डायरी के प्रसारण में मलाला की पहचान छिपाते हुए उसे गुल मकई नाम दिया गया। यह नाम मलाला और उसकी अम्मी को बहुत भाया। धीरे–धीरे आम जनमानस और कट्टरपन्थी तालिबान को भी पता चल गया कि मलाला ही गुल मकई है। बस फिर क्या था, पाकिस्तान समेत दुनिया भर के देशों में मलाला के हौसले की तारीफ होने लगी। स्वयं पाकिस्तान सरकार ने मलाला के इस कदम को मुल्क की तरक्की में मील का पत्थर बताया और मलाला को तालिबान से लौहा लेकर देश में अमन का नया रास्ता खोलने के एवज में पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री ने सन 2011 में राष्ट्रीय युवा शान्ति पुरस्कार से नवाजा था। मलाला पाकिस्तान में सबसे कम उम्र की ऐसी लड़की है जिसे यह राष्ट्रीय सम्मान हासिल हुआ।

मलाला के हौसले से घबराए तालिबान को जब अपना अस्तित्व ही खतरे में पड़ता नजर आया तो उन्होंने मलाला के माध्यम से पूरी कौम को चुनौती देने के लिए मलाला पर गत वर्ष 9 अक्टूबर को जानलेवा हमला कर दिया। यह हमला उस समय हुआ जब मलाला स्कूल से घर वापस लौट रही थी। तालिबानियों ने उसके सिर पर गोली चलाई। गोली मलाला के सिर में लगी थी और वह मौके पर ही बेहोश हो गई थी। अब मलाला अस्पताल में अपना इलाज कराने के बाद घर लौट आई है। पूरी दुनिया के लोगों ने मलाला के शीघ्र स्वस्थ होने की दुआएं मांगी थी। इन्हीं दुआओं की बदौलत मलाला शीघ्र ठीक हुई और वापस अपने परिवार में लौट आई। पाकिस्तान की नन्हीं–मुन्हीं उन बच्चियों से लेकर जिनके हकों की लड़ाई मलाला लड़ रही है, बड़ों–बड़ों तक ने मलाला पर हुए हमले को कायराना हरकत बताते हुए उसकी सलामती की दुआएं की थी। पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री मलाला को देखने के लिए स्वयं अस्पताल गए थे तो अमेरिका की विदेश मन्त्री हिलेरी क्लिंटन तक ने मलाला के हौसले को सलाम किया था और तालिबान की हरकत को निन्दनीय बताया था जिससे मलाला के हौसले को बल मिला और कट्टरपंथी परास्त हुए।

हालांकि तालिबान अभी भी धमकी दे रहा है कि वह मलाला को सबक सीखाकर रहेगा। लेकिन अब मलाला की तरफ आंख उठाकर देखना इतना आसान नहीं है। भारत और अमेरिका समेत पूरी दुनिया की हमदर्दी मलाला के साथ है। दरअसल यह पाकिस्तान सरकार की कमजोरी है जो तालिबान बार–बार सिर उठा रहा है। लेकिन मलाला जैसी शख्सियत का बाल भी बांका न हो और वह फले–फूले इसके लिए भारत ही नहीं पूरी दुनिया तालिबानियों से टकराव मोल ले सकती है। हमे मलाला के जज्बे को सलाम करना चाहिए जो मात्र 11 साल की उम्र से निहत्थी रहकर भी तालिबानियों के लिए चुनौती का सबब बनी हुई है। मलाला जैसी बेटी दुनिया के हर देश, हर शहर व हर गांव में पैदा होने दें तो वह दिन दूर नहीं जब कन्या भ्रूण हत्या करने वालों को भी मलाला जैसी शख्सियत सलाखों के पीछे पहुंचाने में देर नहीं लगाएगी और आधी दुनिया यानि नारी जाति के सम्मान की सहजता के साथ रक्षा हो सकेगी। बस अब जरूरत है तो इस बात की कि मलाला की जान की हर हाल में हिफाजत हो और वह फिर से तालिबान को उनके धर में ही नेस्तनाबूत कर स्त्री शिक्षा की दुनिया भर में संवाहक बने। तभी दुनिया से कट्टरपन्थियों की शिक्षा विरोधी सोच का अन्त होगा और शिक्षा ही तरक्की का नया पैमाना बन सकेगी। जिसके लिए पाकिस्तान को भी दिल से तैयार होने की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मलाला को सम्मान देने और उसे संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देने का अवसर देकर नया इतिहास रचा है जो लड़कियों को अन्याय से लड़ने की ताकत देगा।